ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 147-149
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

पत्रकारिता के क्षेत्र में माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान

डॉ0 भारतेन्दु

ग्राम+पो०–कारीसोवा, थाना – वजीरगंज गया (बिहार), भारत

Received-28.08.2023, Revised-05.09.2023, Accepted-10.09.2023 E-mail: akbar786ali888@gmail.com

सारांश: ***आधुनिक विश्व में पत्रकारिता सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य, अभिव्यक्ति, व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित है। लोकतंत्र का इसे चौथा स्तम्भ कहा गया है। पत्रकारिता लोगों को दुनिया भर की गतिविधियों से परिचित कराती है। कहाँ क्या हो रहा है? इसकी जानकारी देकर लोगों को वह एक दूसरे से जोड़े रखने का काम करती है। पत्रकारिता सूचनाओं के साथ–साथ विचारों के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से रूचियों का परिष्कार भी करती है।***

प्रेस जनता की वह संसद है जिसका अधिवेशन कभी भी समाप्त नहीं होता। यह एक वास्तविकता है कि जहाँ प्रेस जनता का एक जागरुक प्रहरी होता है, वहाँ सरकार और जनता के मध्य एक विश्वसनीय सम्पर्क सूत्र की भूमिका भी वह निभाता है।

कुंजीभूत शब्द– आधुनिक विश्व, अभिव्यक्ति, लोकतंत्र, चौथा स्तम्भ, पत्रकारिता, प्रस्तुतीकरण, परिष्कार, अधिवेशन, जागरुक प्रहरी।

पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' शब्द का प्रयोग होता है, जो 'जर्नल' से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– 'दैनिक'। जर्नल में प्रतिदिन के कार्यों तथा सरकारी बैठकों का विवरण रहता है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में 'पीरियोडिकल' के स्थान पर 'डियूरनल' तथा 'जर्नल' शब्द के प्रयोग हुए हैं। बीसवीं शताब्दी में समालोचना और प्रकाशन को इसके अन्तर्गत माना गया है। 'जर्नल' से बना 'जर्नलिज्म' अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। पत्र–पत्रिकाओं में लेखन व सम्पादन कार्य पत्रकारिता के अन्तर्गत आते हैं। समाचारों का लेखन, सम्पादन, प्रसारण, विज्ञापन तथा समाचार–पत्र संगठन एवं प्रबन्ध पत्रकारिता है। व्यापक दृष्टि से जनसंचार के सभी साधन जैसे रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, पत्र–पत्रिकाएँ, फिल्म आदि इसी के अंतर्गत आते हैं।

सामान्य रूप से पत्रकारिता विविध जनमाध्यमों की सहायता से लोगों तक सूचनाएं पहुँचाने की प्रक्रिया है, जिसमें समाचार परक सूचनाओं का संकलन, सम्पादन आदि कार्य सम्मिलित किये जाते हैं। लोकतांत्रिक समाज में पत्रकारिता वह विशिष्ट विधा है, जो आम आदमी के हितों की रक्षा करती है। यह एक दबाव समूह की तरह होती है, जो सत्ता या सरकार पर जनोन्मुख बने रहने के लिए दबाव बनाये रहती है। पत्रकारिता के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है। विभिन्न विद्वानों ने इसे अपने–अपने ढंग से व्याख्यायित किया है। कुछ विद्वानों की परिभाषाओं को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

डॉ. बद्रीनाथ कपूर के अनुसार– ''पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि के एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश आदि देने का कार्य है।''

हिन्दी शब्द सागर के अनुसार–''पत्रकार का काम या व्यवसाय पत्रकारिता है।''

श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाड़िलकर के अनुसार–''ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकला है।'

डॉ. भंवर सुराणा की दृष्टि में "पत्रकारिता वह धर्म है जिसका सम्बन्ध पत्रकार के उस कर्म से है जिससे वह तात्कालिक घटनाओं और समस्याओं का सबसे सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों के समक्ष उपस्थित कर सके।"

श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी के शब्दों में "पत्रकारिता विशिष्ट देश, काल व परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के सन्दर्भ और आलोक में उपस्थित करती है।"

पत्रकारिता सन्दर्भ ज्ञानकोश में पत्रकारिता को उस विधा के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है।

पत्रकारिता सन्दर्भ ज्ञानकोश में– 'जनसूचना, जनसंचार, जनरंजन अथवा जनसाधारण तक समाचार–विचार–सम्प्रेषण हेतु संचालित माध्यमों (समाचार–पत्र/पत्रिका/आकाशवाणी/दूरदर्शन आदि) सम्पादन, मुद्रण, प्रकाशन, संयोजन, प्रसारण आदि की विद्या या कला' को पत्रकारिता माना गया है।

हर्बट ब्रूकर ने लिखा है कि ''पत्रकारिता वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएं संकलित करते हैं जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते।"

डॉ कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार–"पत्रकारिता वह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है, जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाये वह पत्रकारिता है।"

सी.एम.पोस्ट के अनुसार–"पत्रकारिता वास्तव में एक चुनौती है, जिसके आवश्यक गुण हैं–उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता बनाये रखना, सभी दबावों से परे रहना, सत्यता प्रकट करना, निष्पक्षता, समान व्यवहार और समान आचरण।''

डॉ० अनिल कुमार उपाध्याय के शब्दों में– "पत्रकारिता सामाजिक क्रिया का वह अंग है, जिसमें समाचारों और विचारों का आदान–प्रदान एवं प्रचार–प्रसार किया जाता है।''

लेसी स्टेफेस के अनुसार–"जिन बातों की आपको जानकारी नहीं है, उसके बारे में अवगत कराना पत्रकारिता है।''

जेम्स मैकडोल्ड के अनुसार– ''पत्रकारिता रणभूमि से भी अधिक श्रेष्ठ है, यह व्यवसाय नहीं, व्यवसाय से श्रेष्ठ वस्तु है, यह एक जीवन है।''

माखनलाल चतुर्वेदी का पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण 7 अप्रैल, 1913 से ही माना जाना चाहिए, क्योंकि उस दिन खण्डवा से

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

मासिक पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन शुरु हुआ था, जिससे माखनलाल भी जुड़े रहे। इस पत्रिका के बारे में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा था–'इसे हिन्दी प्रेमियों को अवश्य अपनाना चाहिए। यह पत्रिक नहीं, बल्कि रिव्यू आफ रिव्यूज है।'

पं. माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्ति बहुआयामी था। उनका मूल संस्कार एक कवि का था। अतः वे एक श्रेष्ठ कवि हो गये। प्रभावशाली एवं अच्छी लेखन क्षमता के कारण वे अच्छे निबन्धकार भी थे। प्रभावी वक्ता होने के नाते वे एक निपुण अध्यापक भी रहे। यदि उनकी मूल प्रवृत्ति कवि या शिक्षक बने रहने की होती, तो उन्हें अध्यापकी छोड़ने की क्या आवश्यकता थी ? वास्तव में उनकी मूल प्रकृति पत्रकार की थी। इसीलिए उन्होंने समस्त प्रलोभनों को त्यागकर जीवन पर्यन्त उसी पर आरुढ़ रहकर संघर्षरत रहे।

माखनलालजी का जन्म 4 अप्रैल 1889 को इटारसी, मध्य प्रदेश में हुआ था। वे जब केवल 18 वर्ष के थे, तथी प्रयाग से निकलने वाली विख्यात साप्ताहिक 'अभ्युदय– से जुड़कर पत्रकारिता की दीक्षा प्राप्त की। इसी दौरान उन्हें पं. मदनमोहन मालवीय जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कुछ समय के पश्चात् खण्डवा जाकर उन्हें जीवन निर्वाह हेतु अध्यापकी करनी पड़ी। अध्यापन कार्य करने के साथ बिना किसी आर्थिक लाभ के विभिन्न पत्रों में वे अपना लेख तथा समाचार भेजते रहे। खण्डवा से प्रकाशित तत्कालीन साप्ताहिक 'सुबोध –सिन्धु' में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए थे।

1919 ई. में पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने श्री माधव राव सप्रे, श्रीछेदीलाल ठाकुर एवं श्रविष्णुदत्ता शुक्ल की प्रेरणा और सहयोग से साप्ताहिक 'कर्मवीर' का प्रकाशन शुरु किया। 'कर्मवीर' नाम आरम्भ से ही सार्थक रहा। इसके संपादकीय लेखों में अंग्रेजों के विरूद्ध आग बरसती थी। इसको प्रकाशित करने की अनुमति प्राप्त करने के उद्देश्य से जब माखनलालजी जिला कलेक्टर के पास गये तब उनकी प्रथम मुलाकात ही बड़ी भड़कीली रही। कलेक्टर मिथाइल ने जब उनसे पूछा कि अंग्रेजी का अच्छा साप्ताहिक पत्र होते हुए भी आप हिन्दी का साप्ताहिक क्यों प्रकाशित करना चाहते हैं, तो उन्होंने उत्तर दिया 'आपका अंग्रेजी का साप्ताहिक तो दब्बू है, मैं ऐसा पत्र निकालना चाहता हूँ जिससे ब्रिटिश शासन चलते–चलते रुक जाये।' यह माखनलाल चतुर्वेदी जी की हिम्मत का एक छोटा सा नमूना है। चार वर्ष तक जबलपुर से 'कर्मवीर' निकलता रहा, किन्तु बाद में अनेक कारणों से बाध्य होकर 'कर्मवीर' का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। 1925 में 'कमवीर' खंडवा आ गया और माखनलाल जी के संपादन में लम्बे समय तक निकलता रहा।

माधवराव सप्रे ने वाणी–निर्भयता की जो परंपरा मध्य प्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता में स्थापित किया, उस पंरपरा को आगे बढ़ाने में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का नाम सर्वोपरि है। ब्रितानी साम्राज्यवादी के युग में विद्यार्थीजी और माखनलालजी उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में निरन्तर काँटों के समान चुभ–चुभकर ब्रिटिश शासन के ह्रदय में पीड़ा पहुँचाते रहे।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा' और 'कर्मवीर' के माध्यम से व्यापक राष्ट्रीय संवेदन और शाश्वत मूल्यों का विद्रोह के स्तर पर समन्वित करने की शुरुआत की। इस दृष्टि से 'कर्मवीर' मध्य प्रदेश की पत्रकारिता की एक विराट उपलब्धि है। वे जब तक जीवित रहे 'कर्मवीर' 'राष्ट्रीय भावना की धुरी पर घूमता रहा। उनकी पत्रकारिता ने आत्मशौर्य की अपराजेय भावना को जनमन में भरा और भारत में लेखकों, कवियों और पत्रकारों की जो पीढ़ी तैयार की उसकी समस्त अनुभूतियाँ, कल्पनाएँ और अभिव्यंजनाएं निरन्तर आग से नहाती रहीं'। माखनलाल जी ने असहयोग काल में अपने पत्र 'कर्मवीर' के जरिये और स्वयं जगह–जगह जाकर जो कार्य किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। माखनलाल चतुर्वेदी ने सन् 1923–24 में कानपुर आकर कुछ दिनों तक 'प्रताप' का भी सम्पादन किया, किन्तु 'प्रभा' को पुनः प्रकाशित करने की धुन के कारण वे स्थिर नहीं रह सके। 'प्रभा' दो वर्ष चलकर सदैव के लिए बन्द हो गया।

कानपुर से खण्डवा आने के बाद माखनलाल जी ने 2 अप्रैल 1925 से 'कर्मवीर' साप्ताहिक का पुनः प्रकाशन शुरु किया तो, फिर लगातार 34 वर्षों तक बड़ी कठोरता से पत्रकारिता के मानदण्डों का पालन करते हुए उसका सम्पादन किया। माखनलाल चतुर्वेदी बड़े हिम्मती पत्रकार थे, 'कर्मवीर' के प्रथम अंक में उन्होंने लिखा था– 'जो स्वतंत्रता और स्वत्व–रक्षा की घटनाओं को नहीं सोचना चाहते या उन पर कुछ कार्य नहीं करना चाहते, उन्हें हमारे विचार से राजनीतिक स्वाधीनता का सपना देखना भी पाप है। हमारा अनुरोध है कि तुम्हें अन्यायों, अत्याचारों और मूल्यों के सम्बन्ध में जो कुछ लिखना हो, वह दबकर नहीं खुलकर लिखो।'

'कर्मवीर' के सम्पादक की हैसियत से उन्होंने अपने पत्र के लिए एक छः सूत्रीय आचार संहिता तैयार की थी। यह आचार संहिता आत्म–संयम की पराकाष्ठा थी। यहाँ तक की प्रथम प्रेस आयोग ने भी जिस सोलह सूत्री आचार संहिता का सुझाव दिया था, उससे कहीं अधिक कठोर 'कर्मवीर' की आचार संहिता थी। इसमें उन्होंने ज्ञापन जुटाने, सनसनी खेज खबरें छापने, पत्र के लिए धन की अपील करने, कर्मवीर परिवार की कठिनाइयों का जिक्र तथा ग्राहक संख्या बढ़ाने आदि के लिए किसी भी प्रकार से पत्र के उपयोग पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया।

देश की आजादी से 20 वर्ष पूर्व ही उन्होंने उन सारी ज्वलंत समस्याओं को उजागर किया था, जिन पर राष्ट्रीय सरकार और पत्रकारों ने वर्षों बाद ध्यान देना शुरू किया। उनकी इच्छा थी कि पत्रकार विद्यापीठ बने, पत्रकारों का मंच स्थापित हो, हिन्दी के पत्रकार विदेशों में तथा युद्ध क्षेत्रों में जाकर समाचार भेजें, मुद्रण की प्रणाली में सुधार किया जाये तथा विज्ञापन में नीति और उच्चता का ध्यान रखकर हिन्दी के पत्रों की गुणवत्ता में सुधार लाया जाए। इस प्रकार हिन्दी तथा हिन्दी पत्रकारिता के प्रति माखनलालजी का विशेष अनुराग परिलक्षित होता है।

ऐसी मान्यता चली आ रही है कि पत्रकार को अनेक विषयों की जानकारी होनी चाहिए, भले ही उसे निपुणता किसी में प्राप्त न हो परन्तु पं. माखनलाल चतुर्वेदी की बंगला, मराठी, अंग्रेजी, फ्रेंच और रूसी भाषाओं के साहित्य की गहरी जानकारी थी। चित्रकला में भी उनकी अच्छी दखल थी। वे इतिहास, राजनीति और समाजशास्त्र के अच्छे ज्ञाता–व्याख्याता थे। उन्होंने समय के अनेक लोगों का मार्गदर्शन कर सत्ताधारी बनाया। 'कर्मवीर' के माध्यम से शिक्षण प्रशिक्षण पाकर अनेक व्यक्तिगत नामी पत्रकार बने । एक प्रकार से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

माखनलालजी पत्रकारिता के आचार्य थे और उनका 'कर्मवीर' पत्रकारिता प्रशिक्षण का संस्थान था। उन्होंने सीमित साधनों में ही जितने लोगों को पत्रकार कला से परिचित कराया और जितनी दक्षता उन्हें दिलाई उतना शायद आज के पत्रकारिता विश्वविद्यालय एवं संस्थान भी नहीं कर पा रहे होंगे।

माखनलालजी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान 12 बार जेल यात्राऐं कीं, पचासों बार उनके प्रेस की तलाशियां ली गयीं, आजाद भारत की 'पद्म–भूषण' की उपाधि भी उन्होंने त्याग दिया तथा 1968 में अपने निधन के पूर्व तक जुझारु और तपस्वी पत्रकार की भाँति कभी उन्होंने दीनता का प्रदर्शन नहीं किया। हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता के आदर्श पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी अपने पत्र 'कर्मवीर' के नाम को सार्थक करते हुए अपराजेय, कर्मवीर पत्रकार बनकर जीवन पर्यन्तराष्ट्रीय भावना को जगाते रहे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक, वेदप्रकाश, हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, भाग 1 व 2, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2002.
2. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र : पत्रकारिता के प्रतिमान, जयपुर : किशोरडिपोट, 1917.
3. वोल्सले, रोलैण्ड ई० (संपादित), जर्नलिज्म इन मार्डन इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1964.
4. उपाध्याय, डॉ० अनिल कुमार, पत्रकारिता एवं विकास संचार भारती प्रकाशन, वाराणसी, 2007.
5. जोशी, सुशीला : हिन्दी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010.
6. चन्द्र विपिन : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1995.

*****